* ओ३म् *

भोजन तथा छूतछात

श्री पण्डित जनमेजय विद्यालङ्कार

आयुर्वेदशास्त्री-वैद्यशिरोमणि

प्रथम संस्करण १०००] १ जनवरी १९२५ ई० [मूल्य ॥

ओ३म्

भोजन तथा छूतछात

एक योरोपियन समालोचक ने हिन्दू कौम की हालत का वर्णन करते हुए लिखा है कि हिन्दुओं में जितने झगड़े और लड़ाइयां हैं उनमें से आधी का कारण 'भोजन' है। यह समालोचना सुनने में यद्यपि बुरी और कड़वी मालुम होती है परन्तु है सच्ची ही। हम में मेल मिलाप नहीं, सब हिन्दू जाति अलग २ फटी हुई है। और इस में सन्देह नहीं कि इस फटाव का एक मुख्य कारण रोटी पानी आदि का मेल न होना है। जो इन बनावटी नियमों के अनुसार आचरण करता है उसे वास्तवमें अपनी छोटी बिरादरी के सिवाय तमाम हिन्दू जाति का बायकाट करना पड़ता है तथा जो इनका बहिष्कार नहीं करता उसका बायकाट उसके साथी लोग करदेतेहैं। इसीतरह से हिन्दू जातिके प्रायः सभी आदमियों ने सभी का बायकाट कर रक्खा है, कोई किसी का न छुआ खाने को तैयार है और न उससे अपने भाई का सा सद् व्यवहार करने को। एक और योरोपियन विद्वान् ने वर्तमान हिन्दू जाति की अवस्था का वर्णन करते हुये लिखा है कि वास्तविक धर्माधर्म को छोड़कर उसके स्थान में हिन्दुओं के धर्म में कुल तीन बातें रहगई हैं। ठीक तरह खाना, ठीक तरह

पीना, ठीक तरह विवाह करना, फिर उनकी 'ठीक तरह' शब्द का अर्थ भी बड़ा बेढ़ब है। सब अपने को सब से पवित्र और बड़ा समझते हैं, और इस भाव को सब पर प्रकट करने का तरीका यह निकाला है कि किसी के भी हाथ का बना भोजन न खाया जावे। लेखक महाशय ने इस बात को 'बेहूदा' और 'फितूरी, लिखा है। यह बात भी सुनने में बुरी परन्तु वास्तव में पूरी सत्य है। कितना भारी अनाचार है कि जो कोई हम सब से घृणा करे वही सब से पवित्र माना जावे और जो सब की सेवा करे वही अपवित्र माना जावे। यही भीषण अन्याय हिन्दू जाति में घर कर गया है और इसीलिए हममें मेल तथा वास्तविक प्रेम की बहुत ही थोड़ी मात्रा शेष रह गई है। अब हमको प्राचीन वेदों शास्त्रों के प्रमाण तथा तर्क अर्थात् अपनी बुद्धि की सहायता से यह निश्चय करना है कि भोजन के विषय में क्या २ उत्तम नियम हैं।

प्रश्न–भोजन किसके हाथ का, बनाया हुआ खाना चाहिये।

उत्तर–सब के हाथ का, परन्तु बनाने वाले को सफ़ाई का पूरा ध्यान रखना चाहिए।

अर्थात् चाहे कोई भी हो यदि वह सफ़ाई और पवित्रता के साथ भोजन बनावे तो उसके हाथ का अवश्य खाना चाहिये।

प्रश्न—क्या शूद्र के हाथ की रोटी भी खानी चाहिये।

उत्तर—हां अवश्य बड़ी ख़ुशी से। द्विजों के घरों में रोटी बनाने का काम ही शूद्रों का है। शास्त्रों में ऐसा ही लिखा है और यह तर्कसङ्गत भी है।

"आर्याः अधिष्ठतारः शूद्राश्च संस्कर्तारः स्युः„

आपस्तम्ब धर्म सूत्र प्र० २, प० २, ख० २, सू० ४

आपस्तम्ब मुनि के बनाए हुए धर्म ग्रन्थ में लिखा है कि रोटी बनाने का काम सदा सबके घरों में शूद्र कियाकरें, सब द्विजों को उन्हीं की बनाई रोटी खानी चाहिये, परन्तु द्विजों को चाहिए कि शूद्रों की सफ़ाई और पवित्रता आदि का निरीक्षण करते रहा करें। और ध्यान रक्खें कि रोटी बनाने वालों के वस्त्र साफ़ रहें, उनके बाल और नाखून न बढ़ने पावें इत्यादि।

प्रश्न—शूद्र के हाथ का बना भोजन खाने से द्विज भी शूद्र होजावेंगे; फिर आप कैसे कहते हैं कि शूद्र के हाथ का बना भोजन खाया जावे।

उत्तर—यह बात बिल्कुल बनावटी और झूठी है। शूद्र के हाथ का खाने से कोई शूद्र कभी नहीं होता। विद्या न पढ़ने और मूर्ख होने से मनुष्य शूद्र होजाता है। जिन लोगों ने घृत शक्कर दूध गुड़ आटा दाल साग फल इत्यादि वस्तुएं खाईं उन्होंने वास्तव में सब के हाथ का खालिया। भला जब शूद्र चमार भंगी मुसलमान ईसाई लोग खेतों में से ईख को काटते छीलते हैं और कोल्हू में पेरते हैं, तब उसका रस निकालते हैं फिर टट्टी और पेशाब होकर बिना हाथ धोये ही उन सब चीज़ों को छूते उठाते धरते हैं, आधा गन्ना चूसकर आधा कोल्हू में पेर देते हैं। रस पकाते हैं तो रोटी भी पकाकर खाते जाते हैं। जब सफेद

शक्कर बनाते हैं तब पुराने जूतों से, जिनके तलों पर मट्टी धूल कीचड़ गोबर और पेशाब का ताजा लगा रहता है, उसे रगड़ते हैं। दूध देने वाले तो अपने घर के जूठे बर्तनों का आधा पिया हुआ जूठा पानी दूध में मिला कर बेचते हैं। आटा पीसने वाले नाक साफ करके हाथ बिना धोये ही फिर पीसने लगते हैं, पीसते समय उनका पसीना टपटप आटे में गिरा करता है। अमरूद बेर जामुन इत्यादि फल बेचने वाले फल खाते रहते हैं, मुंह में फल भरा होता व हाथों में जूठा थूक लगा होता है और फल बेचते रहते हैं। भला कौन है जो इन चीज़ों को न खाता हो। जिसने इन चीज़ों को खाया उसने दुनिया भर के हाथ का खा लिया। फिर भला बिचारे गरीब शूद्र ने ही क्या बिगाड़ किया है कि उसके हाथ का न खाया जावे। जब इस तरह बिना समझे रोज सब के हाथ का खाते ही हो तो समझकर खाने में भी क्या दोष है।

प्रश्न—मगर रस शक्कर दूध फल आदि जिस समय अपवित्र हो रहे होते हैं उस समय हम उनको देख नहीं रहे होते, इसलिए उन चीज़ों में कोई दोष नहीं।

उत्तर—वाह, यह खूब कही। आंख तुम बन्द करलो, तो क्या यह वस्तुएं भङ्गी मुसलमान आदि की छुई न रहेंगी। असली बात तो यह है कि यदि घी दूध फल आटा आदि खाना छोड़ दो तो क्या धूल और मट्टी फांकोगे इसलिए अपने मतलब के लिए कहते हो कि बिना देखे में जूठ नहीं होती। फिर अगर कोई चमार या मुसलमान तुम्हारी आंख से ओझल

छूकर कोठरी में रोटी बनाकर ले आवे तो क्या खा लोगे। इस लिए तुम्हारी बातका कुछ मूल्य नहीं है। इसलिए आर्य (हिन्दू) मात्र को चाहिए कि आपस में सब के हाथ का खावें।

प्रश्न मगर देखो भंगी टट्टी साफ़ करताहै, चमार जूते बनाता है, यह लोग अपवित्र काम करते हैं फिर इनके हाथ का खाना तो अपवित्र काम है।

उत्तर—हम भी अपवित्रता का प्रचार नहीं करते हम भी तो सफ़ाई और पवित्रता के पक्षपाती हैं। परन्तु देखिए, प्रात: और सायंकाल हममें से हरेक आदमी भंगी बनता है, पैर में जूता पहिनना भी तो चमड़े को छूना है, हाथ में चमड़े से हर समय घड़ी बांधे रहना क्या चमड़े को छूना नहीं है। फिर तो किसी को भी अपने हाथ का भी न खाना चाहिए। और यह बताओ कि यदि तुम सच मुच ऐसाही मानते हो तो एक चमार कुलोत्पन्न महाशय यदि जूते का काम न करते हों किन्तु और कोई दुकानदारी व्यापार करते हों तो क्या उनके हाथ का खाओगे, क्यों भला तब क्यों नहीं खाते, वह तो चमड़े का काम नहीं करते। इसलिए सफ़ाई का नाम तो तुम केवल बहाने मात्र के लिए लेते हो। असल में उचित है कि जो कोई साफ़ बर्तनों में, सफाई के साथ, साफ़ स्थान में, साफ़ कपड़े पहिनकर, स्वयं स्नान आदि से अपने को साफ़ करके भोजन बनावे उसी का खाना चाहिए। दुनियां भर की सफ़ाई का ठेका घर घर रोटी बनाने का पेशा करने वालों (जिन्हें संयुक्त प्रान्त में महाराज और महाराजिन कहते हैं)

ने ही नहीं लेरक्खा है किन्तु अन्य लोग भी शुद्ध और पवित्र हो सकतेहैं, और उन लोगोंकी अपेक्षा अधिक पवित्र भी होसकते हैं। और यह जो घर घर रोटी बनाते फिरते हैं और अपने को ब्राह्मण भी कहे जातेहैं इनमें से कई ऐसे भी देखे गएहैं जो टट्टी होकर हाथ भी ठीक तरह साफ़ नहीं करते, स्नान भी नहीं करते और कपड़े तो बहुत ही मैले पहिने रहते हैं। इसलिए जनता को अन्धा नहीं बनाना चाहिए, जनता को चाहिए कि रोटी बनाने के लिए शूद्रों को नौकर रक्खे, उनकी सफ़ाई का पूरा प्रबन्ध करे। रोटी बनाने वाले लोग टट्टी साफ़ करने वाले न हों, और न वह कोई घृणोत्पादक काम करने वाले हों। यदि वह लोग घृणोत्पादक कार्य करते भी हों तो उन्हें भोजन बनाने के पहिले इतनी सफ़ाई अपने शरीर की कर लेनी चाहिए कि किसी को देखकर घृणा न होने पावे। अपवित्रता और मलिनता बहुत बुरी बातहै।

प्रश्न—आपका मतलब यह हुआ कि जो कोई भी सफाई से बनावे और पवित्रता का ध्यान रखे, उसकी बनाई रोटी खानी चाहिए, उसकी जात चाहे कोई भी हो।

उत्तर—बिलकुल ठीक है। जो लोग सफाई आदि का ध्यान न रखकर जात पांत देखा करते हैं वह उत्तम भोजन भी नहीं पाते और हिन्दू जाति में विद्वेष फैलाने का पाप भी करते हैं।

प्रश्न—यह तो आर्य (हिन्दू) जाति के सब लोगों के विषय में आपने कहा, अब यह बताइये कि मुसलमान ईसाई आदि के हाथ की बनी रोटी भी क्या खाई जाय।

उत्तर—यदि इनलोगों के बर्तन मांस आदि पकाने से दूषित न हों तथा वह लोग भी पवित्रता से बनावें तो इनके हाथ की रोटी खाने में भी कोई दोष स्वास्थ्यरक्षा की दृष्टि से और धर्मशास्त्र की दृष्टि से नहीं है। स्वास्थ्यरक्षा और धर्म शास्त्र की आज्ञायें केवल सफ़ाई के लिए और अभक्ष्य मांस आदि से बचने के लिए कहती हैं। यदि इन दोनों बातों का ध्यान रखकर ईसाई और मुसल्मान भी रोटी बनावें तो उसके खाने में कोई दोष नहीं। एक तीसरी बात और भी है अर्थात् राजनैतिक दृष्टि। अर्थात् यदि किसी समय आर्य जातिकी महासभा (हिंदू महासभा) किसी बड़े कारण से यह आवश्यक समझे कि मुसल्मान व ईसाई आदि का बहिष्कार कर दिया जावे और इनसे सब सम्बन्ध तोड़ दिए जावें तथा इनसे खाने पीने का व्यवहार भी बन्द कर दिया जावे, तो आर्य जाति की रक्षा के लिए इन सब का अच्छी तरह से पूरा २ बहिष्कार अवश्य करना होगा। उस समय भी जो व्यक्ति विधर्मियों को अपनाता रहेगा और अपने से द्वेष करता रहेगा वह जाति का शत्रु होगा। शायद मुसलमानों का बहिष्कार करने के लिए ही राजनैतिक दृष्टि से 'मुसल्मानी राज्य' में हिंदुओं ने मुसलमानों की छुई हुई सब चीजों को लेना छोड़ दिया था। सो अवसर के अनुसार अपना संगठन मजबूत करने और अन्य किसी ऐसे कारण से जो कि हिन्दूजाति की राजनैतिक उन्नति में बाधक हो, हिन्दू महासभा की आज्ञा से उन लोगों से सब सम्बन्ध

तथा भोजन आदि के सम्बन्ध भी अवश्य छोड़ दिए जाएंगे। परन्तु साधारणतया केवल स्वास्थ्यरक्षा व केवल धर्मशास्त्र की दृष्टि से शुद्धता और पवित्रता से बने हुए भोजन मात्र के खाने में कोई दोष नहीं। अगर मुसलमान ईसाई के छूने से ही भोजन अपवित्र होजाता हो तो मुसलमानों के हाथ का पानी मिला हुआ दूध, फल, मेवा आदि क्यों खाते हो तथा ईसाईयों के हाथों की बनाई हुई विलायती दवायें, शराब, शक्कर आदि क्यों खाते पीते हो। यदि इनका बनाया भोजन अपवित्र माना जायगा तो देश देशान्तर में यात्रा करना असम्भव होजावेगा। आर्य [हिन्दू] प्रचारकों को तथा व्यापारियों को धर्म प्रचार और व्यापार के लिए देश विदेश अवश्य जाना चाहिए सो क्या विलायत और अमेरिका में भी रोटी बनाने वालों को यहीं से साथ लेते जावेंगे। आजकल भी हजारों हिन्दू लोग विदेशों में जाकर ईसाई मुसलमान सभी के हाथ का खाते हैं यदि वे पवित्रता का ध्यान रखें तो धर्म की कोई हानि नहीं है। इस लिए बुद्धिमानों को चाहिए कि लकीर के फ़क़ीर न बने। अपनी आंखों से देखें, दिमाग़ से अपना भला बुरा और दुनियां की चाल चलन को देख कर धर्मानुसार आचरण करें। शुद्धता पवित्रता स्वास्थ्यरक्षा और अपनी आर्यजाति की राष्ट्रीय उन्नति तथा राजनैतिक अवस्थाओं का सदा ध्यान रखकर भोजन का प्रबन्ध करें। आंख के अन्धे होकर अपनी बनी बनाई रसोई और परोसी तैयार थाली को भी मुसलमान के छू लेने से छोड़

देना उचित नहीं है और अपनी आर्यजाति के हित और संगठन के विरुद्ध जातिद्वेष भी बहुत बुरा है। सदा सोच समझकर बुद्धि से काम लेना चाहिए।

प्रश्न-अपने इन कथनों की पुष्टि में शास्त्रीय प्रमाण दीजिये।

उत्तर-सुनिए [१] 'जीवेत् कारुककर्मभिः' मनु० अ० १०. मनु जी महाराज कहते हैं कि शूद्रों अर्थात् अनपढ़ मूर्ख लोगों को चाहिए कि द्विजों अर्थात् विद्वानों के घरों में रोटी बनाकर, और इस सेवा के लिए उनसे वेतन लेकर, अपना निर्वाह करें।

[२] शतं दासी सहस्राणां नित्यं यस्य महानसे
पात्री हस्तं दिवारात्र मतिथीन् भोजयत्युत। महा. वि. अ १०.
महाभारत में लिखा है कि महाराज युधिष्ठिर के महल में अतिथियों को भोजन परोसने और खिलाने के लिए हजारों शूद्र और शूद्रायें नौकर थीं।

[३] प्रविश्य च गृहं रम्यं आसनेनाभिपूजितः
पाद्यमाचमनीयञ्च प्रतिगह्य द्विजोत्तमः। महा. व. अ. २७
महर्षि कौशिक एक (धर्मव्याध) कसाई के घर में गए तो उसने ऋषि का स्वागत किया और उनको जल भी पिलाया यह महाभारत का श्लोक है।

[४] पाद्यमाचमनीयं च प्रादात्सर्वं यथाविधि
तामुवाच ततो रामः श्रमणीं धर्मसंस्थिताम्। रामा. अ. सं ७४.

यह रामायण का प्रमाण है कि महाराजा रामचन्द्र जी ने 'श्रमणी' नामी भीलिनी के द्वारा दिए हुए फलों और पानी को खाया और पिया। इसी तरह के अनेकों प्रमाण हैं। अतः जो भी सफ़ाई से बनावे उसी का खाना, तथा इस विषय में छोटे बड़े के बखेड़े में न पड़नाही शास्त्र सम्मत है।

प्रश्न—सब लोग इकट्ठे बैठ कर खावें कि अलग अलग अपने अपने चौकों में।

उत्तर—सभ्य समाज का यही नियम होना चाहिये कि सब लोग साफ़ कपड़े पहन कर इकट्ठे ही बैठकर भोजन करें। यह सब महापाखण्ड है कि अपना २ अलग२ चौका लगाकर पकाना खाना। 'नौ कनौजिए और दस चूल्हे' यह लोकोक्ति सत्य है, परन्तु हमें इस बात पर दुःख होना चाहिए। हम आपस में सर्वथा फटे हुए और बिलकुल अलग २ हैं। जहां १० मुसल्मान व ईसाई हैं वहां एक रोटी बनाने में लगता है तथा अन्य सब अपने २ व्यापार व्यवसाय में व्यग्र रहते हैं, नियत समय पर आकर सब इकट्ठे भोजन कर लेते हैं। इस प्रकार उनका बहुत समय बचता है, लकड़ी आदि का खर्च कम होता है, परिश्रम थोड़ा लगता है तथा परस्पर प्रेम और भ्रातृभाव बढ़ता है। इसके विपरीत हम लोगों में से प्रत्येक को सुबह शाम अलग २ अपना २ चूल्हा फूंकना पड़ता है। इससे सबका समय खराब जाता है, धन अधिक व्यय होता है, परिश्रम अधिक पड़ता है,

सब को कष्ट होता है, और फिर भी परस्पर घृणा, झूठा अभिमान, लड़ाई, झगड़े, और द्वेषभाव बढ़तेही जाते हैं। इसलिए सबको इकट्ठे बैठकर तथा स्वच्छ कपड़े पहिनकर भोजन करना चाहिए। हां एक बात अवश्य है कि कोई भी दो व्यक्ति कभी एक ही थाली में इकट्ठे मत खावें, क्योंकि ऐसा करने से अनेक रोगों के फैलने का डर रहता है। जूठा खाने से बुद्धि भी बिगड़ती है।

प्रश्न—कच्ची पक्की रसोई का विचार करें कि नहीं।

उत्तर—यह सब धूर्तों का चलाया हुआ पाखण्ड है। घी दूध आदि बढ़िया पदार्थ अधिक खाने को मिलें तथा मिठाइयों की थालियां प्राप्त हों, इसीलिए यह ढोंग फैलाया गया है। सखरी निखरी और कच्ची पक्की रसोई कुछ नहीं, केवल भोले भाले लोगों को ठगने का एक तरीका है।

प्रश्न—भोजन चौके में खाना चाहिए कि बाहर।

उत्तर—जहां भी कहीं साफ़ स्थान हो वहीं बैठकर खाना चाहिए। यह सत्य है कि हम लोगों के चौके प्रायः गन्दे संकुचित मैले और धुआं से भरे होते हैं, वहां बैठकर खाने से दिल प्रसन्न नहीं होता, सो ऐसी जगह में बैठकर न खाना चाहिए। जहां खुला रमणीक विशाल सुन्दर स्थान हो वहीं पर ले जाकर भोजन करना चाहिये। समझदार लोगों को तत्व को ग्रहण करना चाहिए तथा चौके चूल्हे के बखेड़ों में नहीं पड़ना चाहिये।

प्रश्न—अपने इन कथनों की पुष्टि में प्रमाण दीजिए।

उत्तर—समानी प्रपा सह वो ऽन्नभागः समाने योक्त्रे सहवो युनज्मि, सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः। वेद। सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीत मस्तु मा विद्विषा वहै। तैत्तिरीयोपनिषद्।

परमात्मा सब मनुष्यों को-जिनमें छोटे व बड़े कहाने वाले सब शामिल हैं—उपदेश देते हैं कि 'तुम सब एक ही स्थान पर बैठकर पानी पिया करो, इकट्ठे ही बैठकर भोजन खाया करो, इकट्ठे होकर धर्म का आचरण किया करो तथा इकट्ठे बैठकर रोज संध्या हवन किया करो। यह अथर्ववेद का मन्त्र है। हम सब एक दूसरेकी सहायता किया करें, इकट्ठे बैठकर हम सब भोजन खाया करें, इकट्ठे मिलकर कसरत किया करें, हमारी विद्या सफल हो, हम आपस में कभी घृणा वा लड़ाई झगड़ा न करें। यह उपनिसद् के बचन हैं।

क्या हमारा हिन्दू समाज इन वेदों की आज्ञाओं पर अमल करता है। यदि हमारा आचरण इनके अनुसार होता तो हम बहुत मजबूत और बहुत सुसंगठित होते। भला कहां लिखा है कि अलग २ अपने २ चूल्हे फूंका करो, किसी का छुआ मत खाओ, किसी के साथ मत खाओ। कौन शास्त्र आज्ञा देता है कि चौके चूल्हे सखरी निखरी और छूत अछूत के झगड़ों में ही सदा उलझे रहो। परमात्मा कृपा करें कि स्वार्थियों द्वारा

चलाई हुई इन कुप्रथाओं को अबतो हमारी आर्य जाति (हिंदू समाज) छोड़दे और वेदोक्त आज्ञाओं का पालन करके मजबूत और संगठित बने।

देखिए, महाराजा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में योरोप अमेरिका चीन ईरान यूनान कन्धार आदि के लोग भी शामिल थे, सब के लिए इकट्ठे भोजन बनता था और इकट्ठे ही बैठकर सब खाते थे, उस समय अलग २ चौका नहीं लगता था, न कोई भी छून छात के बखेड़े में पड़ता था। महाभारत युद्ध में सब इकट्ठे ही भोजन करते थे, यदि दिनभर चौके चूल्हे में फंसे रहते तो लड़ते कब। वह लोग तो घोड़ों पर चढ़े हुए जूते पहिने हुए भी भोजन करते जाते थे, न कोई उन्हें बिरादरी से निकालता था, और न कोई इसे बुरा मानता था। भला सोचिए कि यदि महाराज शिवाजी और महाराना प्रतापसिंह की फौजें इस चौके चूल्हे में पड़ी रहतीं तो कैसे मुसल्मानों के दांत खट्टे करतीं, और कैसे हिन्दू राज्य की स्थापना हो सकती। यदि गुरु गोविन्दसिंह इस छूत छात के बखेड़े में पड़ते तो सदा ही उनकी फौज द्वारा बनाए भोजन को एक मुसल्मान आकर छूलेता और मुसल्मानों की फौज मजे में उसको खाती पीती तथा सिक्ख सदा भूखे ही रहते। पर इसके विरुद्ध बहादुर गुरु ने तो अपने सिपाहियों को हुकुम दिया था कि मुसल्मानों की पकी रोटियां छीनलाओ और अपना पेट भरो तथा शेरों की तरह लड़ो। आज भी जो हिन्दू लोग विदेशों में जाते हैं वे इस

कुप्रथाओं को छोड़ ही देते हैं, जो फौजों में लड़ते हैं अथवा देश के लिए जेलों में जाते हैं वे इन कुप्रथाओं को छोड़ ही देते हैं। परन्तु यह बैठे ठाले लोग जिन्हें करने को कुछ काम नहीं है, तथा आपस में लड़ने झगड़ने को अन्य कोई बहाना नहीं मिलता, वे ही इन कुप्रथाओं को आज भी महत्व की दृष्टि से देखरहे हैं तथा हिन्दूजाति की उन्नति और संगठन में बाधा डाल रहे हैं। बहादुरों के लिए युद्ध में एक हाथ से तलवार चलाते जाना और दूसरे हाथ से रोटी काट काट खाते जाना ही धर्म है और चौके चूल्हे तथा छूत अछूत के बखेड़े में पड़कर हार जाना भारी पाप है। चौके चूल्हे की मूर्खता में पड़कर ही हमने चौका लगाते २ विरोध बढ़ाते २ अपनी सब स्वतन्त्रता आनन्द धन राज्य विद्या पुरुषार्थ सब पर चौकाही लगा दिया है। आज हमारी जाति हाथ पर हाथ धरे बैठी है कि कहीं से कुछ मिले तो पकाकर खावें। पर अब तो खाने को भी नसीब नहीं होता। सचमुच इस अन्ध परम्परा ने हमारे आर्यावर्त देश पर पूरा चौका लगाकर सबकुछ चौपट कर दिया है।

इसलिए विद्वान् धार्मिक लोगों का परम कर्तव्य है कि वे देश और जाति के हित के लिए इन सब बनावटी अवैदिक उलझनों में कभी न फँसें, और अपने किसी भी भाई व बहिन को इनमें न फँसने दें। जैसा हम ऊपर दिखा आये हैं उन्हीं वैदिक आज्ञाओं के अनुसार सबको अपनी भोजन व्यवस्था बनानी चाहिए क्योंकि उसी से भला होगा।

प्रश्न—यह सब तो बहुत ठीक और युक्ति संगत है। अच्छा अब यह बताइये कि आर्यों (हिन्दुओं) को मद्य मांस का सेवन करना चाहिये कि नहीं।

उत्तर—हरगिज़ नहीं। मद्य मांस मनुष्यमात्र के लिए अभक्ष्य पदार्थ हैं। सभी शास्त्रों में मद्य मांस सेवन का निषेध किया गया है। मनुस्मृति रामायण महाभारत आदि में तो ऋषियों ने बार २ मद्य मांस की निन्दा की है। मनुष्यों के दांत मुख आमाशय आंतें आदि की बनावट भी शेर आदि से भिन्न है जिससे स्पष्ट है कि मांस मनुष्य का स्वाभाविक भोजन नहीं है। मांस देर में हज़म होता है और क्रूरता व क्रोध को [बल को नहीं] बढ़ाता है। यदि मनुष्य को घृत दुग्ध पर्याप्त मात्रा में मिलते रहें तो वह चिरजीवी नीरोग और बलवान् होगा, उसके बल का मुकाबला मांसाहारी लोग नहीं कर सकते। आर्यों में पहिले यह अभक्ष्य वस्तु नहीं खाई जाती थी, पर जब से मुसल्मान ईसाइयों का इस देश पर राज्य हुआ तभी से यह कुप्रथा अनेक हिन्दुओं में भी आगई है।

सुरा मत्स्याः पशोर्मांस मासवं कृशरौदनम्
धूर्तैः प्रवर्तितं चक्रं नैतद्वेदेषु विद्यते। महा, शा. २६४ अ.

बहुत से लोग कहा करते हैं कि प्राचीन आर्य मांस खाते थे तथा वेदों में भी मांस भक्षण की आज्ञा है, परन्तु वेदों के अद्वितीय मर्मज्ञ पण्डित श्री भीष्मपितामह कहते हैं कि 'मछली

खाना, मांस खाना, शराब पीना, आसव पीना, किसरा भात खाना, यह सब बातें धूर्तों ने चलाई है, वेदों में तो इन चीजों के खाने पीने की कहीं भी आज्ञा नहीं हैं'।

बस बुद्धिमान् लोगों को चाहिए कि मद्य मांस का व्यवहार छोड़ दें, और घी दूध का व्यवहार अधिक मात्रा में किया करें। घी दूध की प्राप्ति पर ही सब उन्नतियों का आधार है। परन्तु घी दूध की प्राप्ति के लिए गोरक्षा की बहुत आवश्यक्ता है। गोहत्या से हमारी जाति और देश का सत्यानाश हो रहा है। इस लिए देश और जाति का भला 'चाहने वालों को उचित है कि अतिशीघ्र इस देश में गोहत्या सर्वथा बन्द करवाने के लिए प्रबल प्रयत्न करें।

आशा है सत्यग्राही सज्जन इस पुस्तक में लिखे नियमों पर विचार तथा आचरण करके सदा उन्नति और आनन्द के भागी बनेंगे।

कल्पतरु आयुर्वैदिक औषधालय ।

इस औषधालय में आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार सब रोगों का इलाज बहुत निपुणता के साथ किया जाता है। जो महाशय अपना हाल पत्र में लिखकर भेजते हैं उनके लिए औषधियां भेजी भी जाती हैं। आयुर्वेद की सब प्रसिद्ध औषधियां यहां हर समय तैयार रहती हैं, जो महाशय मंगवाते हैं उन्हें तुरन्त भेजी जाती हैं। सब औषधियां बड़े परिश्रम से शास्त्रीय विधियों द्वारा तैयार की जाती हैं, और मूल्य भी यथाशक्ति कमही रक्खा है। यह निश्चय है कि इस औषधालय की सब औषधियां ठीक प्रकार बनी हुई और अत्यन्त गुणकारी होती हैं। शारीरिक निर्बलता, सब प्रकार के ज्वर, अनेक प्रकार के प्रमेह आदि प्रचलित रोगों के लिए कुछेक परमोत्तम तथा अतिशीघ्र फ़ायदा देने वाली 'पेटेन्ट' आयुर्वैदिक दवाएं भी रहती हैं। अवश्य परीक्षा कीजिए।

मुख्य चिकित्सक—

श्री पण्डित जनमेजय विद्यालङ्कार

आयुर्वेद शास्त्री-वैद्यशिरोमणि

जैन कुमार बिल्डिङ्ग, नई सड़क, कानपुर. यू. पी.

पं० बद्रीनारायण शुक्ल के प्रबन्ध से रघुनन्दन प्रेस कानपुर में मुद्रित और रचयिता द्वारा प्रकाशित.

पुस्तक मिलने का पता—

श्री पं० जनमेजय विद्यालङ्कार

आयुर्वेद शास्त्री—वैद्य शिरोमणि

जैनकुमार बिल्डिङ्ग, नई सड़क, कानपुर, यू. पी.